# द्वितीय सत्रार्द्ध मैथिली (पीजी) के छात्रों के लिए पाठ्य सामग्री

लेखक : डॉ. सुधीर कुमार झा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना-5

## समालोचना वा समीक्षा / समालोचना वा समीक्षाक विविध प्रणाली / समालोचक किंवा समीक्षक मे अपेक्षित गुण

समालोचना आ समीक्षा दुनू एक-दोसरक पर्यायथिक। समालोचनाक अर्थ होइत अछि — 'चतुर्दिश सँ नीक जकाँ निरीक्षण करब', (सम + आ + लोचन + आ)। समीक्षा शब्दक सेहो इएह अभिप्राय अछि, (सम + ईक्ष + आ)। समालोचनाक अंग्रेजी पर्याय क्रिटिसिज्म (criticism) सेहो एही अर्थक द्योतक थिक। criticism, krites धातु सँ बनल अछि जकर कैकटा अर्थ होइत छैक — निर्णय करब, छिद्रान्वेषण करब, सौन्दर्यक मूल्यांकन करब। अतः समालोचना ओ माध्यम थिक जे ललितकला आ विशेषतः साहित्यकलाक सौन्दर्य आओर दोषक निर्णय एवं मूल्यांकन करैत अछि। समालोचकक कर्त्तव्य काव्यक गुण-दोषक विवेचन आ जीवनक सन्दर्भ मे ओकर उपयोगिताक मूल्यांकन करब थिक।

## समालोचना वा समीक्षाक विविध प्रणाली

(1) शास्त्रीय समालोचना (Academic criticism)

समीक्षाक एहि प्रणाली मे शास्त्रानुमोदित नियमानुसार काव्यक गुण-दोषक विवेचन कएल जाइत अछि। काव्यक विभिन्न उपकरण यथा- अलंकार, गुण, वृत्ति, रसादिक उल्लेख रहैत अछि।

(2) व्याख्यात्मक समालोचना (Method of Appreciation)

एहि पद्धति मे समीक्षक कविक अन्तरात्मा मे पैसि ओकर भाव कें सम्यक् बुझबाक चेष्टा करैत छथि। तत्पश्चात् अपन गप्प ओ विचार पाठकवृन्द कें बुझएबाक प्रयत्न करैत छथि।

(3) तुलनात्मक समालोचना (comparative criticism)

तुलनात्मक समीक्षाक अन्तर्गत दुइ वा दुइ सँ अधिक कविक तुलनाक मार्फत हुनका लोकनिक काव्यगत गुण-दोषक निर्णय कएल जाइत अछि। कखनो काल एके कविक विभिन्न रचनाक तुलनात्मक व्याख्या सेहो होइत अछि। अंग्रेजी साहित्य मे तुलनात्मक

समालोचनाक अनुमोदक प्रो. सेण्ट्सबरीक मत छन्हि जे कविक तुलनात्मक अध्ययने हुनक सर्वोच्च आलोचना थिक। (comparative mode of criticism is the highest mode of judgement)

(५) ऐतिहासिक समालोचना (Historical criticism)

एहि समालोचना मे कविक सृजनक पाछाँ सम्बद्ध इतिहासक शोध कएल जाइत अछि। ई पता लगाओल जाइत अछि जे जाहि अवधि मे कवि अपन काव्यक रचना कएलन्हि, ओहि कालक सामाजिक व्यवस्था केहन छल, स्वयं कविक परिस्थिति केहन छलन्हि। साहित्य समाजक प्रतिबिम्ब होइत अछि। समालोचक साहित्य द्वारा समाजक समकालीन इतिहास कें तकैत कविक मस्तिष्क पर औकए प्रभाव देखैत छथि। यूरोप मे आलोचकक एक वर्गक तँ कहब छन्हि जे साहित्य कतिपय सामाजिक शक्ति आ परिस्थितिक संघर्षक परिणाम अछि। (Literature is nothing more than the result of certain social forces.)

(६) निर्णयात्मक समालोचना (Judicial criticism)

समालोचनाक एहि प्रणाली मे समालोचक न्यायाधीशक काज करैत छथि। ओ निर्णय करैत छथि जे साहित्य मे कोन कविक की स्थान छन्हि। कविक गुण लेल उचित सम्मान दैत छथि आ दोष हेतु निन्दा सेहो करैत छथि।

(७) मनोवैज्ञानिक समालोचना (Psychological criticism)

एहि समालोचनाक सूत्रपात फ्रायडक मनोविश्लेषण सिद्धान्तक आधार पर भेल अछि। फ्रायड मनोवैज्ञानिक अध्ययनक मार्फत निम्न मत प्रतिपादित कएलन्हि - 'साहित्य अतृप्त वासनाक तृप्तिक साधन थिक।' ऐतिहासिक समीक्षा मे तँ कवि पर ऐतिहासिक परिस्थितिक प्रभाव ताकल जाइत अछि परञ्च मनोवैज्ञानिक समीक्षा मे कविक वैयक्तिक स्वभाव, आन्तरिक आ निजी जीवनक अनुभूति मे हुनक रचनाक उत्स कें ताकल जाइत अछि।

(८) सैद्धान्तिक समालोचना (Theoretical criticism)

समीक्षाक ई प्रणाली समीक्षाक सिद्धान्त बनएबा सँ सम्बद्ध अछि। एकर अन्तर्गत समीक्षक अपन बुद्धि आ प्रतिभाक आधार पर समीक्षा लेल सिद्धान्तक प्रतिपादन करैत छथि। एहिठामक समालोचक मूलतः विचारक होइत छथि। हुनका मे चिन्तनक प्रधानता होइत छन्हि।

(९) प्रगतिवादी समीक्षा (communistic criticism)

एहि समीक्षा पद्धतिक जन्म रूस मे भेल। एकर आधार

समाजवादी यथार्थवाद अछि। एकर प्रवर्तक मैक्सिम गोर्की छलाह। रूस मे ई प्रणाली बड़ प्रचलित अछि।

समालोचनाक उपर्युक्त विविध प्रणालीक सम्यक् विवेचन सँ स्पष्ट अछि जे समालोचना अनेक ढ़ंग सँ कएल जाए सकैत अछि आ सभ प्रकारक अपन-अपन वैशिष्ट्य छैक।

## समालोचक किंवा समीक्षक मे अपेक्षित गुण

(1) काव्यक आत्मा मे प्रवेशक दक्षता

समालोचक वा समीक्षकक सभ सँ प्रधान वैशिष्ट्य कवि वा काव्यक आत्मा मे प्रवेश करबाक हुनक दक्षता होइत छन्हि। जाहि भाव-भंगी मुद्रा आ तन्मयताक संग कवि अपन काव्यक सृजन करैत छथि ताहि मे प्रवेश कएनिहार पाठके उक्त कविक सुच्चा आलोचक भए सकैत छथि।

(2) सम्पूर्ण काव्यक अध्ययन

कोनो कविक काव्यकृतिक समीक्षा लेल ई अनिवार्य जे विवेच्य कविक सम्पूर्ण काव्यक अध्ययन कएल जाए। एकर अभाव समीक्षकक निरीक्षण मे त्रुटि आनि सकैत अछि।

(3) शास्त्रीय आलोचनेटा पूर्ण नहि

शास्त्रानुमोदित नियमक अनुकरणे पर आलोचना करब अपेक्षित नहि। एहि मे दोष होएबाक सम्भावना अधिक रहैत अछि। वास्तविक समीक्षा तँ ओ थिक जे पाठकक व्यक्तिगत प्रतिक्रिया कें स्थान दैत अछि। (Judge independently, not by precedent)

(4) कविक लक्ष्य पर दृष्टि

जनिक समीक्षा करबाक अछि तनिक ध्येय पर दृष्टि राखब उचित। लक्ष्य आ मन्तव्य कें समग्र रूपें बुझलाक उपरान्ते आलोचना-कार्य अग्रसारित करबाक चाही।

(5) नवीनते कलाक कसौटी नहि

समीक्षा करबाक क्रम मे कोनो नव मत आकि विचार उपस्थित कए देब आलोचना नहि कहाओत। नव सिद्धान्तक प्रतिपादन मे तत्वक होएब अपेक्षित, तथ्य आधारित समीक्षा होएबाक चाही।

(6) दलगत भावनाक त्याग

आलोचक कें निष्पक्ष होएबाक चाही, सुच्चा आलोचक 'हंसवृत्ति' कहबैत छथि। जे हंसक समान दूध कें अलग आ पानि कें पृथक् कए दैत छथि।

(7) 'अहं' केर निषेध

समालोचना मे 'अहं' लेल कोनो स्थान नहि होइत छैक। समालोचक कें अपन विचार वा इच्छा थोपबाक प्रयास नहि कएल जएबाक चाही। ऐलेक्जेण्डर पोप सेहो कहने छथि- Avoid Pride, eliminate malice and selflove.

(8) भाषेटा मानदण्ड नहि

आलोचक सदिखन ई ध्यान राखथि जे विचारक स्पष्टता पहिने जरूरी छैक, भाषाक लालित्य बाद मे। भाषाक सौन्दर्य मे विचारक स्पष्टता दबि जाए, से आलोचकक त्रुटि कहाओत।

(9) तार्किकता आ संगति

आलोचक वा समीक्षक मे अध्ययनक गहनता होएब आवश्यक। एहि सँ हुनका द्वारा कएल जेल कोनो कृतिक समीक्षा मे तार्किकता आ संगति केर आभास भेटत। (It is not enough that a critic has judgement and learning. He should also have truth in him.)